साहित्योत्सव 2016
festival of letters
15-20 February 2016
दैनिक समाचार बुलेटिन
बुधवार, 17 फ़रवरी 2016

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2015 अर्पण समारोह सम्पन्न

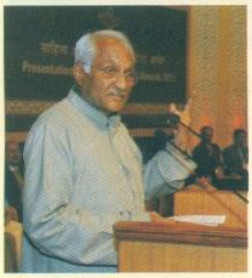

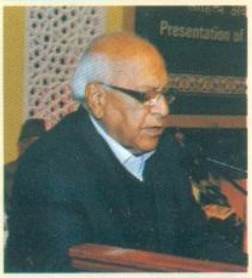

साहित्योत्सव का मुख्य आकर्षण साहित्य आकदेमी पुरस्कार अर्पण समारेह रहा। दिनांक 16 फ़रवरी 2016 को सायं 5.30 बजे फ़िक्की सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह में 24 भारतीय भाषाओं के रचनाकारों को पुरस्कृत किया गया। अतिथियों का स्वागत साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने किया। उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी लेखकों की, लेखकों के लिए और लेखकों द्वारा संचालित होने वाली संस्था है। उन्होंने साहित्य अकादेमी की प्रगति का विवरण दिया।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, अध्यक्ष, साहित्य अकादेमी ने कहा कि यह ऐतिहासिक और अनूठा मंच है जहाँ एक साथ पूरा देश मौजूद है। उन्होंने भारतीय साहित्यकारों और विदेशी रचनाकारों का तुलनात्मक अंतर करते हुए अपनी भाषा और साहित्य पर गर्व करने की बात कही। उन्होंने कहा कि लेखक का काम सत्ता बनना नहीं होता। सत्ताकांक्षी लेखक, सच्चा साहित्यकार नहीं सत्तानशीन राजनीतिक होता है। राजनीति करने वाले लेखक का मूल्यांकन साहित्यकार के रूप में नहीं होगा। रचनाकार का मूल्यांकन भाषा के भीतर होता है। उन्होंने रहीम का उदाहरण देते हुए देते हुए कहा कि वे सेना में थे तो सैनिक जैसा काम भी किया होगा लेकिन हम उन्हें एक कवि के रूप में जानते-पहचानते है क्योंकि उन्होंने आदर्श जीवन मूल्यों को अपनाने के लिए हमें प्रेरित किया है। हम आज भी उनकी रचनाओं से संबल पाते हैं। उन्होंने कहा कि आज मातृभाषाओं पर संकट है क्योंकि हम कोलोनियल थिंकिंग से ग्रस्त हैं और हीन भावना हमारे भीतर घर कर गई है। इस सोच से हमें मुक्त होना होगा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात उर्दू समालोचक अकादेमी के महत्तर सदस्य और पूर्व अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग ने भाषा की शक्ति को रेखांकित करते हुए कहा कि भाषा चलती तो है अँधेरे से लेकिन उसका सफ़र उजाले की ओर होता है। भाषा जब अँधेरे-उजाले का खेल खेलती है तो वह जादू करती है। उन्होंने कहा कि वाक्य के शब्दों के बीच जो खाली जगह, जो अंतराल होता है, जो ख़ामोशी होती है वह भी मुखर होती है। भाषा अपने शब्दों में से तो बोलती ही है अपनी ख़ामोशी मे से भी बोलती है। प्रो. नारंग ने मानवी यकजहती, आपसी प्रेम और अहिंसा के प्रति समर्पण की प्रस्तावना की। उन्होंने कहा कि हमारे पूरे देश के संत कवियों ने इसीलिए एक ही बात कही है -- इश्क की बात। उन्होंने कबीर, और एक ज़ेन मतावलंबी चीनी संत की रचना तथा सुल्तान बाहू की वाणी का उदाहरण देते हुए कहा कि यह प्राचीन परंपरा आदि धर्मग्रंथों से होते हुए ग़ालिब

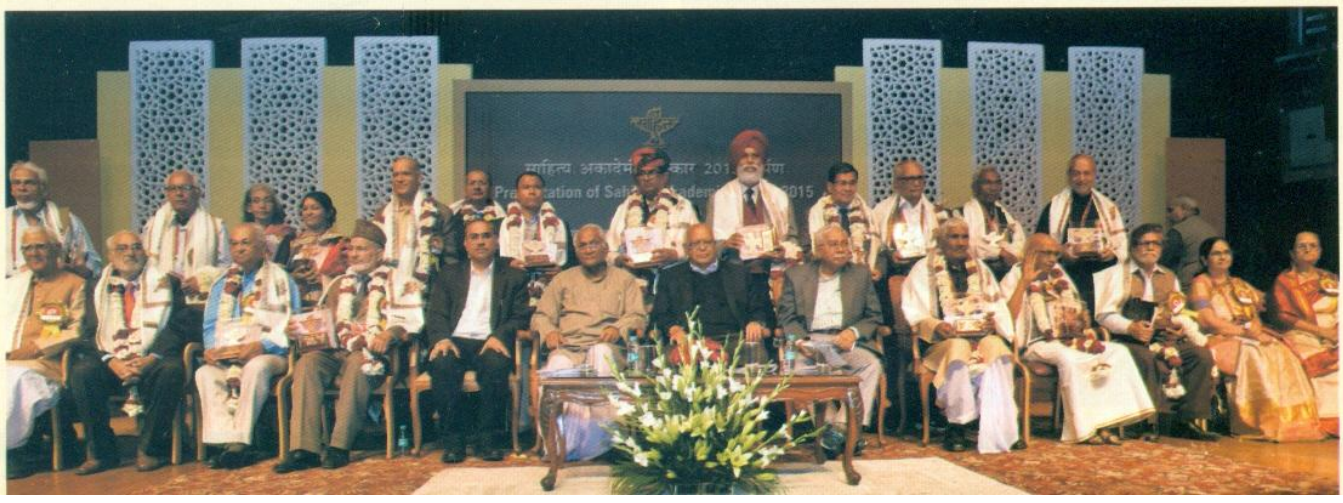

की शायरी और अब तक के साहित्य में चली आई है। इसको सम्मान देने और उसे सम्हाल लेने से ही हमें सभी चुनौतियों और समस्याओं से बाहर निकलने का रास्ता मिल सकेगा।

इसके बाद 24 भाषाओं के रचनाकारों को उनकी कृतियों के लिए अकादेमी पुरस्कार प्रदान किए गए। वर्ष 2015 के साहित्य अकादेमी के पुरस्कार विजेता हैं- कुल सैकिया (असमिया), ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म (बोडो), ध्यान सिंह (डोगरी), साइरस मिस्त्री (अंग्रज़ी), रसिक शाह (गुजराती), रामदरश मिश्र (हिंदी), के. वि. तिरुमलेश (कन्नड), बशीर भद्रवाही (कश्मीरी), उदय भेंब्रे (कोंकणी), मनमोहन झा (मैथिली), के. आर. मीरा (मळयालम्), क्षेत्रि राजेन (मणिपुरी), अरुण खोपकर (मराठी), गुप्त प्रधान (नेपाली), विभूति पट्टनायक (ओड़िया), जसविंदर सिंह (पंजाबी), मधु आचार्य 'आशावादी' (राजस्थानी), रामशंकर अवस्थी (संस्कृत), रबिलाल टुडु (संताली), माया राही (सिंधी), आ. माधवन (तमिऴ), वोल्गा (तेलुगु), शमीम तारिक़ (उर्दू)।

अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अंगवस्त्र, 1 लाख की पुरस्कार राशि का चेक और प्रतीक चिन्ह देकर रचनाकारों को सम्मानित किया। अकादेमी के सचिव ने प्रशस्ति वाचन किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. चंद्रशेखर कंबार, उपाध्यक्ष, साहित्य अकादेमी ने समाहार वक्तव्य में कहा कि आज के साहित्य को विश्व फलक पर पूरे सम्मान के साथ रखा जा सकता है।

पुरस्कृत रचनाकारों का मीडिया से हुआ संवाद

साहित्योत्सव के दौरान 16 फ़रवरी 2016 को पूर्वाह्न 11.00 बजे रवींद्र भवन लॉन में पुरस्कृत रचनाकारों का मीडिया से संवाद आयोजित हुआ। कार्यक्रम के आरंभ में गीतांजलि चटर्जी, उपसचिव, साहित्य अकादेमी ने सभी का स्वागत किया।

इस सत्र का संचालन चर्चित मीडियाकर्मी, लेखक एवं अनुवादक रफ़ीक मसूदी और डी.डी. नेशनल में कार्यरत डॉ. अमरनाथ अमर ने किया। कुमार अनुपम, सपांदक (हिंदी) ने सभी पुरस्कृत रचनाकारों का परिचय दिया। रचनाकारों से रफ़ीक मसूदी ने भाषा और साहित्य की जीवन और समाज में भूमिका का सवाल किया जिसके जबाव में असमिया भाषा के पुरस्कृत कथाकार कुल सैकिया ने कहा कि भाषा जीवन और समाज के बीच व्यवहार को आसान बनाती है और उस भाषा में लिखा गया साहित्य उस भाषा के समाज, परिवेश, परिस्थितियों का जीवंत दस्तावेज़ होती है। जिस साहित्य में सभी का सुख-दुख, राग-विराग और संघर्ष भरपूर मात्रा होता है वह समाज और उसका देश अपने नागरिकों सहित अधिक सक्षम और सतर्क होता है।

अमरनाथ अमर ने भाषा और साहित्य की सामर्थ्य और आज के समय में उसकी प्रासंगिकता का प्रश्न पूछा। प्रश्न का उत्तर देते हुए हिंदी भाषा के पुरस्कृत साहित्यकार डॉ. रामदरश मिश्र ने कहा कि भाषा दरअसल जीवन की साँस और उसाँस है। लोक जीवन और उसकी भाषा की सामर्थ्य को उन्होंने कई उदाहरणों के सहारे समझाते हुए कहा कि भाषा मनुष्य और श्रमशील समाज से बनी है और साहित्य भी। जिस साहित्य में अनुभव अधिक होते हैं वो सच्चा साहित्य होता है। साहित्य गाँव का हो या शहर के लेखक का, उसका अपनी ज़मीन, अपनी मिट्टी से जुड़ाव ही उसे सुंदर और सार्थक बनाता है।

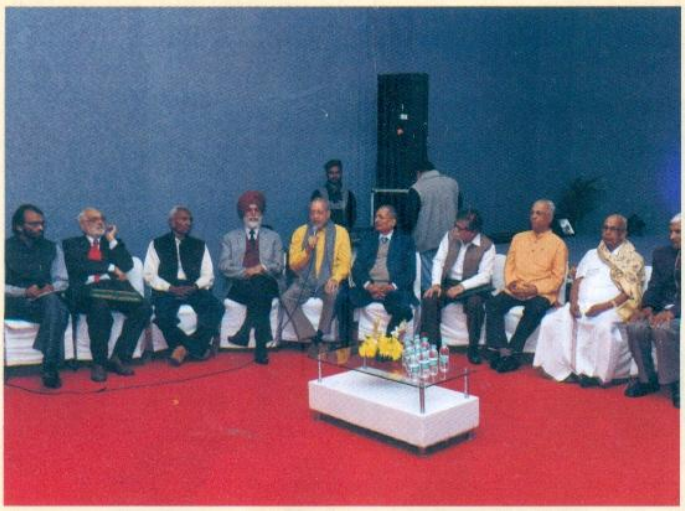

कश्मीरी रचनाकार बशीर भद्रवाही ने कहा कि आज पूरी दुनिया के सामने अनेक समस्याएँ हैं। उन सभी से टकराने के लिए, उनसे निजात पाने के लिए हमारे संत-सूफ़ी साहित्य में बहुत से उत्तर मौजूद हैं। बात को आगे बढ़ाते हुए उर्दू के रचनाकार शमीम तारिक़ ने कई मक़बूल शायरों के शेर सुनाए। उन्होंने कहा कि सभी भाषाओं का साहित्य अलग-अलग है, उनके लेखक अलग-अलग हैं लेकिन हमारी समस्याएँ, हमारा जीवन एक-सा है इसलिए हमारे साहित्य में एकसूत्रता है। सभी भाषाओं का साहित्य भी अलग-अलग होकर भी एक ही साहित्य है।

अंग्रेज़ी के पुरस्कृत उपन्यासकार साइरस मिस्त्री ने एक प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि जीवन और परिवेश बदलने के साथ-साथ भाषा और साहित्य भी अपना नया रूप लेता है। आज का साहित्य एक संपूर्ण जीवन का प्रस्तुत कर पा रहा है। तेलुगु की पुरस्कृत रचनाकार वोल्गा ने कहा कि अब हाशिए का शोषित पीड़ित समाज अपनी बात खुद कह रहा है। स्त्री, दलित आदिवासी और अनेक ऐसे वर्ग को अपना हक़ प्राप्त करने के लिए ज़रूरी स्वर और भाषा मिल गई है। सिंधी की रचनाकार माया राही ने विस्थापन के दंश को बहुत मार्मिक तरीके से प्रस्तुत करते हुए कहा कि मेरे साहित्य का असल तत्त्व विस्थापन की पीड़ा और करुणा है जिसके सहारे मैं 'महाकरुणा' की ओर गति करती हूँ। मराठी के पुरस्कृत रचनाकार ने उत्कृष्ट शैली में विभिन्न कलाओं के सांस्कृतिक महत्त्व के प्रति अपनी विशुद्ध प्रतिबद्धता को प्रकट किया और विष्णु धर्मोत्तर पुराण के रोचक प्रसंग के सहारे कलाओं के अंतर्संबंध की व्याख्या की। बोडो के पुरस्कृत रचनाकार ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म और संस्कृत के पुरस्कृत रचनाकार राम शंकर अवस्थी ने अपने साहित्य की विशेषताओं की और साहित्य प्रेमियों का ध्यान आकृष्ट किया। कन्नड़ के पुरस्कृत रचनाकार के. वी. तिरुमलेश ने नई टेक्नोलॉजी का पूरा उपयोग लेखन में करने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस सत्र में पुरस्कृत रचनाकारों ने साहित्य की वर्तमान दशा-दिशा तथा प्रकाशन के संबंध में भी अपने विचार व्यक्त किए। 2 घंटे तक चले इस विचारोत्तेजक सत्र में पुरस्कृत रचनाकारों के साथ मीडिया और साहित्य प्रेमियों के बीच बहुत सार्थक बातचीत हुई।

साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता की घोषणा

15 फ़रवरी 2016 को साहित्य अकादेमी के सर्वोच्च सम्मान -- महत्तर सदस्यता की घोषणा की गई। यह महत्तर सदस्यता इस बार पंजाबी के प्रतिष्ठित रचनाकार प्रो. गुरदयाल सिंह तथा बाङ्ला के प्रख्यात कवि नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती को दी जाएगी। यह महत्तर सदस्यता विशिष्ट साहित्यकारों के लिए सुरक्षित है और एक समय में 21 महत्तर सदस्य ही हो सकते हैं।

10 जनवरी 1933 में भाइनी फतेह में जनमे प्रो. गुरदयाल सिंह पंजाबी के प्रख्यात लेखक और उपन्यासकार हैं। उनको उपने उपन्यास 'मरबी दा ढाबा' से प्रसिद्धि प्राप्त हुई। यह उपन्यास 1964 में प्रकाशित हुआ था। इस पर 1989 में एक फिल्म का भी निर्माण हुआ। गुरदयाल सिंह जी की अभी तक 37 कृतियाँ प्रकाशित हैं जिनमें 10 उपन्यास, 11 कहानी-संग्रह, 3 नाटक, 9 बाल कृतियाँ शामिल हैं। आपको साहित्य अकादेमी, पद्मश्री, ज्ञानपीठ पुरस्कार आदि प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हैं।

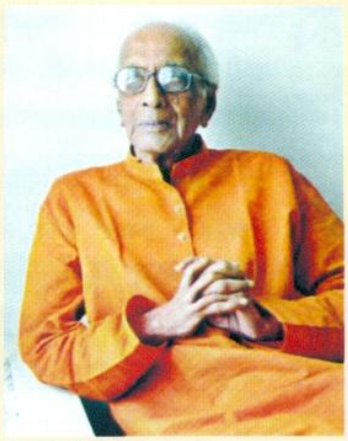

1924 में जनमे नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती ने अपना साहित्यिक जीवन एक पत्रकार के रूप में आरंभ किया। वे बच्चों की पत्रिका 'आनंद मेला' के सम्पादक रहे। 'नील निर्जन, अंधकार, बरांदा, कोलकातार, जिश, श्रेष्ठ कविता' और 'उलंगा राजा' नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं। 'उलंगा राजा' के लिए उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

रासलीला और पुंगचोलम की हुई रंगारंग प्रस्तुति

आज के कार्यक्रम

लेखक सम्मिलन : पुरस्कृत लेखक अपना अनुभव साझा करेंगे, पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

युवा साहिती : युवा लेखक उत्सव, पूर्वाह्न 10.30 बजे, रवींद्र भवन लॉन

संवत्सर व्याख्यान : चंद्रशेखर धर्माधिकारी, प्रख्यात विधिवेत्ता एवं गाँधी विचारक द्वारा सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

साहित्योत्सव 2016 कार्यक्रम

18 फ़रवरी 2016 (बृहस्पतिवार)

आमने-सामने : पुरस्कृत लेखकों/विद्वानों से बातचीत, पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन, पूर्वाह्न 10.30 बजे, रवींद्र भवन लॉन

राष्ट्रीय संगोष्ठी : 'गाँधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव' का उद्घाटन विख्यात विदुषी कपिला वात्स्यायन, विशिष्ट अतिथि प्रख्यात विद्वान एवं शिक्षाविद् कृष्ण कुमार द्वारा द्वारा, पूर्वाह्न 11.00 बजे, साहित्य अकादेमी सभागार

सांस्कृतिक कार्यक्रम : निज़ामी बंधुओं द्वारा क़व्वाली की प्रस्तुति, सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

19 फ़रवरी 2016 (शुक्रवार)

भारत की अलिखित भाषाओं पर परिसंवाद : पूर्वाह्न 11.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

राष्ट्रीय संगोष्ठी : 'गाँधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव', पूर्वाह्न 10.00 बजे, साहित्य अकादेमी सभागार

सांस्कृतिक कार्यक्रम : *ओथेलो* की 'कथकली' शैली में प्रस्तुति, सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

20 फ़रवरी 2016 (शनिवार)

संगोष्ठी : 'अनुवाद चेतना और भारत में भारतीय साहित्यिक परंपराएँ', पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

राष्ट्रीय संगोष्ठी : 'गाँधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव', पूर्वाह्न 10.00 बजे, साहित्य अकादेमी सभागार

आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ, पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

सांस्कृतिक कार्यक्रम : 'चेराव' (बाँस नृत्य) की प्रस्तुति, सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग (मंडी हाउस मेट्रो स्टेशन के पास), नई दिल्ली-110 001
फोन : +91-011-23386626 / 27 / 28
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
वेब-साइट : www.sahitya-akademi.gov.in